सुं कोस पूण

नरहरिदास

ये रोहड़िया शाखा के चारण लक्खाजी के पुत्र थे। इनका जन्म सं. 1648 और देहान्त सं. 1733 में हुआ था। ये जोधपुर नरेश महाराजा गजसिंह के आश्रित थे जिन्होंने इन्हें टहला नामक गाँव प्रदान किया था। ये दोनों भाई थे। छोटे भाई का नाम गिरधरदास था। इनके कोई सन्तान नहीं थी। इस संबंध में इनकी भावज ने इन्हें एक दिन जब ताना दिया तब क्रुद्ध होकर इन्होंने उससे कहा कि सन्तान तो मेरे लिए नहीं है जिससे मेरे मरने के पश्चात मेरे वंश का नाम दुनियाँ में रह सके, पर विधाता ने मुझे कविता करने की अलौलिक शक्ति प्रदान की है जिसके द्वारा मैं अपने नाम को सदैव के लिए संसार में अमर कर दूँगा। इसी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए इन्होंने 'अवतार चरित्र' की रचना की, जिससे अभी तक इनका नाम चला आता है।

'अवतार चरित्र' ज्ञान सागर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हो चुका है, जो बहुत अशुद्ध है। इसमें 520 पृष्ठ है। इनमें 320 पृष्ठों में रामावतार का और शेष में कृष्णावतार, कपिलावतार, बुद्धावतार आदि का संक्षिप्त वर्णन है। ग्रंथ की भाषा पिंगल है जो बहुत सरल एवं व्यवस्थित है। कथाप्रसंग के अनुकूल छंदों को चुनने में भी कवि ने अच्छी पटुता प्रदर्शित की है, पर नरहरिदास के भावों में मौलिकता का प्राय: अभाव-सा है। मालूम होता है, तुलसी के रामचरित मानस तथा केशव के रामचन्द्रिका को सामने रखकर कवि ने इस ग्रन्थ की रचना की है: क्या रचना-पद्धति क्या घटनाक्रम, क्या भावव्यंजना और क्या उक्ति-चमत्कार सभी रामचरित मानस से मिलते-जुलते हैं। जहाँ कहीं रामचरित मानस से विभिन्नता है, वहाँ केशव की रामचन्द्रिका का अनुकरण किया गया है।

चाप चढ़ावन को गनै, सकै न अवनि छुड़ाइ।
भई उर्व्वी निर्व्वीर अब, कह्यो जनक अकुलाइ॥
जो जानत निर्व्वीर भुव, तो न करित पन एहु।
पावक प्रजलत गेह अब, तब कहँ पइयत मेहु॥
रही कुँवारी कन्यका, लिखत विरंच ललार।
पर कीनौ जो परिहरौं, तो उपहास संसार॥

—अवतार चरित्र

रहा चढाउब तोरब भाई, तिल भरि भूमि न सकै छुड़ाई।
अब जनि कोउ माखै भट मानी, वीर विहीन मही मैं जानी॥
तजहु आस निज निज गृह जाहू, लिखा न विधि वैदेहि विवाहू।
सुकृत जाय जो प्राण परिहरऊं, कुँवरि कुँवारि रहै का करऊं॥
जे जनतेऊं बिन भट महि भाई, मै प्रण करि करतेऊं न हँसाई॥

—रामचरित मानस

Scanned by CamScanner

कहि पूछत तुम मुद्रिका, होत मौन इहि हेत।
नाम विपर्जय आपनै, तिहिं उत्तर नहिं देत॥

—अवतार चरित्र

तुम पूछत कहि मुद्रिका, मौन होत यहि नाम।
कंकन की पदवी दई, तुम बिन या कहँ राम॥

—राम चन्द्रिका

कहते हैं कि अवतार-चरित्र के अतिरिक्त नरहरिदास ने 16-17 ग्रंथ और भी बनाए थे पर उन सबका पता नहीं लगता। केवल नीचे लिखे छः ग्रंथों के नामों का पता है—

(1) दशमस्कन्ध भाषा (2) रामचरित्र कथा (3) अहिल्या पूर्व प्रसंग (4) वाणी (5) नरसिंह अवतार कथा (6) अमरसिंहजी रा दूहा। इनकी कविता देखिए:—

जा दिन आन उपाइ थकै सब, ता दिन भाइ सहाइ करैगो।
शोक अलोक विलोकि त्रिलोक, रह्यो भव पूरसु दूरि टरैगो॥
जैसें चढ़ै गजराज की पीठि, त्यों कूकर वादि हिं भूसि मरैगो।
जों करुणामय स्याम कृपा तो, कहा जग की अकृपा बिगरैगो॥

कंटक कपूर भए कौतुक भयानक से,
हार अहि कए अंधियार भयो आरसौ।
नाहर से नूपुर पहार से पहर भए
सेज समसान गए, भूसन सुभारसौ॥
आक तो तंबीर सिरवाइ सी सुबास सबै,
चीर भए कौंछी से, अंजन अंगार सौ।
विपति दुसह ऐसी कपि अवधेस बिना
प्रान भए पाहुनै से प्रेम भौ प्रहार सौ॥

कल्याणदास

कल्याणदास रचित 'गुण गोविंद' नामक एक ग्रंथ का पता हाल ही में लगा है। इसके अंतिम दोहे में इन्होंने थोड़ा-सा अपना व्यक्तिगत परिचय भी दिया है जिससे सूचित होता है कि ये मेवाड़ राज्य के समेळा गाँव के निवासी लाखणोत शाखा के भाट बाघजी के बेटे थे—

बास समैळे बाघ तण, लाखणौत कलियाण।
गायौ श्री गोविंद गुण, पाए भगत प्रमाण॥

गुण-गोविंद डिंगल भाषा का ग्रंथ है। सं. 1725 की लिखी हुई इसकी यह हस्तलिखित प्रति उदयपुर के सरस्वती भंडार में सुरक्षित है। ग्रंथ सं. 1700 में रचा गया था।

Scanned by CamScanner

सतरा सै सँवताँ बरीष पहिले मैं बखणँ।
मास चैत सुदी दसमी पुष्य रविवार प्रमाणँ॥

इसमें भगवान श्री रामचन्द्र और श्री कृष्णचन्द्र की विविध लीलाओं का बहुत सरस और भक्ति भावपूर्ण वर्णन है जो 197 छंदों में समाप्त हुआ है। भाषा सरल और विषयानुकूल है। ग्रंथ साहित्य की दृष्टि से अत्युत्म और श्लाघनीय है। रचना का नमूना यह है—

गज आनन गज करन, दंत गज गजहि सुंडाळ।
बदन सु ललित कपोल, चोळ चख लोल सुढाळ॥
रव रव लंब कदंब, अम्ब मदमत्त मत्तसरि।
कर मोदक उद्र लंब, करत प्रणाम क्रपा करि॥
गुणदधी गुणनिधी गणपति, अछर भंडार उधारि कबु।
आरंभ परम लीला इहव, सो प्रारंभ तुब सरण अबु॥

साँइदान

ये सीलगा खाँप के चारण मेवाड़ राज्य के झाड़ोली गाँव के निवासी थे। इनके पिता का नाम मेहाजळ था। आविर्भाव-काल सं.1709 है। मिश्र बंधु-विनोद में इनका रचना-काल सं.1191 बतलाया गया है जो अशुद्ध है[5]। इन्होंने वृष्टि-विज्ञान का एक ग्रन्थ बनाया जिसका नाम 'संमतसार' है। ग्रन्थ अपूर्ण है। इसमें 277 पद्य है: मुख्य छंद दोहा, पद्धरि और छप्पय है। ग्रंथारंभ में गणेश, सरस्वती और चण्डिका की स्तुति की गई है। फिर मुख्य विषय शुरू होता है। ग्रंथ शिव-पार्वती-संवाद के रूप में है। पार्वती प्रश्न करती है।

शिवजी उसका उत्तर देते हैं। रचना बहुत साधारण है। उदाहरण—

दूहा

पारबती कीनौ प्रसन, हे देवन के देव।
सुरभष दुरभष परत हैं, सो भव कहिये देव॥
महादेव उत्तर दियौ, सुनहु उमा चितलाय।
सुरभष दुरभष को तुमैं, देऊं भेद बताय॥

कविता

ऊगै धूमर केत गगन तारा बह तुट्टै।
मँडैं धनुष बिन मेघ बिना बद्दल जल बुट्टै॥
धरा कंप जळ उमँग गैब अम्बर फिर गाजै।
बिन धन पवन अकास भानु ससि कुंडल राजै॥
यहु गर्ग रिषि कै वचन सुनि पंडित ह्वै सो उर धरौ।
उल्लकापात जो एक हुव सरब धान संग्रह करौ॥

Scanned by CamScanner

कुशल धीर

ये जैन कवि सोजत नगर के निवासी थे। इनके गुरु का नाम कल्याण लाभ था। इन्होंने तीन ग्रन्थ बनाए; राठौड़ पृथ्वीराज कृत 'वेलि क्रिसन रुक्मिणी री' की टीका (सं.1696), केशवदास कृत 'रसिकप्रिया की टीका'(सं. 1727), और लीलावती रासौ (सं.1728)। प्रथम दो ग्रन्थ गद्य में और तीसरा पद्य में है। इनकी भाषा गुजराती मिश्रित राजस्थानी है। रचना से ऊंची प्रतिभा और विद्वत्ता झलकती है। इनके गद्य का थोड़ा-सा अंश यहाँ दिया जाता है—

"हिव रुक्मिणी माता नउ कथा प्रसंग कहइ। दक्षिण दिसिइ विदर्भ नासा देस दीपइ। तीयइ देस विषइ कुंदणपुर नामइ पुर नगर अत्यन्त सर्वोत्कृष्ट पणइ शोभइ। तणि नगर विषइ भीषमक एक राजा राज्य करइ। केहवउ छइह राजति कहइ। अहि कहतां नागलोक। नर,

---

7. अणी = कटारी। ऊदल = उदयसिंह। आहणै = चोट करे। सभ = सभा। मैंगळ = हाथी। सारिषौ = समान। तण = तनय। अग = पहाड़। अबीह = निडर। आफालियौ = मारा। कांणि = मर्यादा। कमखीयौ = रुष्ट हुआ। वट = मार्ग,प्रण।
8. काँकीड़ा = कीड़े;गिरगिट। लौड़ै = लोटते हैं, रेंगते हैं। हणमत = हनुमान। महराण = समुद्र। दादरौ = दादुर। बोह = बहुत। झालै = धारण करती है।

Scanned by CamScanner